आदि की सहायता लेनी पड़ती है।

अवधान का निर्माण

Q.1 सम्प्रत्यय (संकल्पना / अवधारणा) का अर्थ, निर्माण, विशेषताएँ व इसके प्रकार का वर्णन कीजिए?

अवधारणा का अर्थ :— भाषा दर्शन का शब्द है जो संज्ञानात्मक विज्ञान, तत्व मिमांसा एवं मस्तिष्क के दर्शन से सम्बंधित है। अवधारणा व्यक्तिगत संवेदना के परिवर्तन का एक रूप है जो मनुष्य में सामाजिक रूप से निर्मित मूल्यों से सम्बंध रखता है व भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति होती है उसका सामाजिक महत्व होता है जिसका सदैव बोध किया जाता है। अवधारणा चेतना का आवश्यक तत्व है क्योंकि यह सम्प्रत्ययों के वस्तु-अर्थ तथा अर्थपूर्ण वस्तु के प्रतिबिंबों के साथ जोड़ती है और हमारी चेतना को स्वतंत्र रूप से परिचालित करने के लिए सम्भावना प्रदान करती है।

अवधान के निर्माण में भाषा की भूमिका :— भाषा के द्वारा मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है अपनी बात को कहने के लिए और दूसरों की बात समझने के लिए भाषा एक सशक्त साधन है प्राणी की आयु बढ़ने के साथ-2 सम्प्रत्ययों में अधिक जटिलता और विशिष्टता आदि आती-जाती है क्योंकि नए अनुभवों और नए ज्ञान की वृद्धि के साथ-2 सम्प्रत्ययों में भी परिवर्तन होता रहता है। प्राणी को समुचित रूप से व्यवहार करने के लिए आवश्यक है कि वह कुछ विशिष्ट क्रम या व्यवस्थाएँ बनाना सीखे तथा अपने ज्ञान को क्रमबद्ध तथा सुसंगठित बनाए। शिशु अवस्था से ही व्यक्ति वस्तुओं

या घटनाओं की समानता और समानता के आधार पर वर्गीकरण करना सीखता है। समानता और असमानता के आधार पर वस्तुओं या घटनाओं के वर्ग द्वारा अर्जित ज्ञान में दोनों प्रक्रियाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उदाहरणस्वरूप कुछ उभयनिष्ठ समानताओं के कारण घोड़ा, बंदर, गाय, हाथी इत्यादि को पशु वर्ग में रखा जाता है।

अवधारणा की विशेषताएँ:— संप्रत्ययों में कुछ विशेषताएँ पाई जाती हैं। जो इस प्रकार से हैं:—

- संप्रत्यय प्रतिनिधात्मक होते हैं जिनसे वस्तु या घटना के सम्बंध में प्रतिनिधित्व किया जा रहा है।
- यह संज्ञानात्मक संगठन की व्यवस्था है इसमें मानसिक प्रक्रियाएँ शामिल होती है।
- संप्रत्यय कुछ चिंतन का मूलभूत पद है।
- संप्रत्यय के अंतर्गत व्यक्ति अपने पूर्व में किए हुए अनुभवों को संगठित या विशेष विधित करता है।
- वस्तु या घटनाओं में उभयनिष्ठ समानता होने का बोध होता है।
- व्यक्ति को अपने ज्ञान को व्यवस्थित करने तथा वस्तुओं और घटनाओं को समझने के लिए संप्रत्ययों की आवश्यकता होती है।

अवधारणा के प्रकार:—

संप्रत्ययों का वर्गीकरण कई प्रकार से किया जा सकता है अर्थात संप्रत्ययों को कई आधार पर भिन्न-2 वर्गों में बाटा जा सकता है:—

① साधारण एवं जटिल संप्रत्यय:— संप्रत्ययों के इस प्रकार के वर्गीकरण में साधारण संप्रत्यय उन संप्रत्ययों को कहा जा सकता है

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.: ______
Date: / /

जब वस्तुएँ एक विशेषता के आधार पर छांटी गई हो। उदाहरण के लिए भिन्न 2 वस्तुओं में से गोलाकार वस्तुओं को छाँटकर एक वर्ग में रखना। जटिल संप्रत्यय उन संप्रत्ययों को कहा जाता है जिनकी पहचान जो दो या दो से अधिक विशेषताओं के आधार पर की जाती है। जटिल संप्रत्यय कई प्रकार के होते है जिनका वर्णन इस प्रकार से है:—

(i) संयोजक संप्रत्यय:— दीस और उसके साथियो ने कहा की ऐसे संप्रत्यय जिनमें विभिन्न गुण संयुक्त रूप से विद्यमान होते है संयोजक संप्रत्यय कहलाते है। दूसरे शब्दो में जब किन्ही वस्तुओ को दो या दो से अधिक विशेषताओ के आधार पर किसी एक वर्ग में रखा जाता है तो उसे संयोजक संप्रत्यय कहते है।
उदाहरण :— सफेद व चौकोर वस्तुओ का एक समूह

(ii) वियोजक संप्रत्यय:— ऐसे संप्रत्यय जिसमें अनेक गुण एक साथ हो अथवा अनेक गुणों में एक गुण विद्यमान हो वियोजक संप्रत्यय कहलाते है। दूसरे शब्दो में यदि किसी वस्तु को उस आधार पर किसी वर्ग मे रखा जाता है। तो उसमें उस तरह की अथवा दोनो तरह की विशेषताएँ हो

(iii) संबंधात्मक संप्रत्यय:— यह वह संप्रत्यय है जिसमें वस्तुओ के गुण के संबंधो को दर्शाया जाता है। इस प्रकार के संप्रत्यय में मेज, कुर्सी, मकान, पेड

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

इत्यादि मूर्त संप्रत्यय हैं तथा न्याय, सत्य, प्रेम इत्यादि अमूर्त संप्रत्यय हैं। दोनों प्रकार के हो सकते हैं।

(iv) प्रतिबंधित संप्रत्यय :-
इस प्रकार के संप्रत्यय में किसी वस्तु या विषय के संबंध में शर्त लगायी जाती है कि यह वस्तु या विषय संप्रत्यय है।

(v) द्विप्रतिबंधित संप्रत्यय :-
इस प्रकार के संप्रत्यय के संबंध में दोहरी शर्त लगायी जाती है। उदाहरणस्वरूप यह कहा होगा वही सफेद संप्रत्यय है जोकि चौकोर है।

2. सुपरिभाषित व कुपरिभाषित संप्रत्यय :-
इस प्रकार के वर्गीकरण में संप्रत्ययों के संप्रत्ययों को कहा जाता है जिनमें संप्रत्यय होने की सभी आवश्यक विशेषताएँ शामिल हो।
उदाहरणस्वरूप :- यदि हम पक्षियों को एक वर्ग में रखें (जैसे :- तोता, मैना, हंस, बुलबुल) कहा जाए तो अधिक समय नहीं लगेगा, क्योंकि इन सभी संप्रत्ययों में पक्षियों की सभी आवश्यक विशेषताओं के साथ-साथ मूल विशेषता उड़ना भी शामिल है।
इसके विपरीत ऐसे संप्रत्यय जिनमें अन्य विशेषताएँ तो पाई जाती हैं परंतु मूल विशेषता नहीं होती उसे सरलता से संप्रत्यय से संबंधित वर्ग का सदस्य नहीं माना जाता। ऐसे संप्रत्यय

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

को अपरिभाषित संप्रत्यय कहते हैं।
उदाहरणस्वरूप :- यदि पक्षियों को एक वर्ग में रखने के लिए कहा जाए, जैसे - तोता, मैना, हंस, पेंगुइन, बुलबुल को पक्षियों के वर्ग में रख देंगे। परंतु पेंगुइन के विषय में विचार करना पड़ेगा क्योंकि पेंगुइन उड़ नहीं सकता। इसमें उड़ने संबंधी मूल विशेषता शामिल नहीं है और ऐसी वस्तुओं को वर्गीकृत करने में अधिक समय लगेगा।

3. आदि प्ररूप संप्रत्यय :- ऐसे संप्रत्यय जिनमें वस्तुओं की विशेषताओं के साथ-साथ विशिष्ट विशेषताएँ भी हो। वह वस्तु अपने वर्ग को मॉडल के रूप में सटीक उदाहरण का प्रतिनिधित्व करती हो आदि प्ररूप कहा जाएगा। समीप के अनुसार, कोई वस्तु अपने वर्ग के संप्रत्यय का जितना सटीक प्रतिनिधित्व करती है उतना ही इसका नाम सरलता के साथ किया जा सकता है।

अवधारणा के निर्धारित तत्व :-

① उद्दीपक चरों का प्रभाव :- हाइड बिरउर ने अपने प्रयोगों के आधार पर यह पता किया की प्रयोज्य संख्या और रंग उद्दीपकों की तुलना में मूर्त वस्तुएँ वस्तुओं का संप्रत्यय शीघ्र होता है। ब्राउन तथा आर्चर ने अपने एक प्रयोग में कार्ड पर बने हुए चित्रों की सहायता से तथा अनेक प्रायोगिक दशाओं की सहायता से अधिगम, अभ्यास, वितरण सामग्री की जटिलता

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

के प्रभावों का अध्ययन किया प्रयोगों के परिणाम से यह स्पष्ट हुआ की संप्रत्यय अधिगम उतना ही अधिक कठिन होता है जितना उसकी जटिलता बढ़ाई जाती है। ब्राउन ने अपने एक प्रयोग में तीन प्रायोगिक दशाओं में अध्ययन के आधार पर यह सिद्ध किया की अप्रासंगिक सूचनाओं में वृद्धि संप्रत्यय अधिगम में कठिनाई उत्पन्न करती है।

② सूचनापरख प्रतिपूर्ति:— ओस्टमैन ने 1955 में अपने एक प्रयोग में देखा की संप्रत्यय अधिगम उस समय कठिन हो जाता है जब सही अनुक्रिया करने पर गलत सूचना दी जाए अथवा गलत अनुक्रिया करने पर सही सूचना दी जाए। अतः कहा जा सकता है की भ्रामक सूचना प्रतिपूर्ति संप्रत्यय अधिगम के लिए हानिकारक है। एक प्रयोग में देखा गया की सूचना एवं प्रतिपूर्ति का अभ्यातर मध्यांतर जितना बढ़ाया जाता है। संप्रत्यय अधिगम उतना ही कठिन हो जाता है। बॉर्न ने अपने एक प्रयोग से सिद्ध किया की विलम्ब से मिली सूचना प्रतिपूर्ति का अधि संप्रत्यय अधिगम पर प्रभाव नहीं पड़ता।

③ संप्रत्यय अनुक्रियाओं की जटिलताओं का प्रभाव:— अधिगमकर्ता से अपेक्षित अनुक्रियाएँ भी संप्रत्यय अधिगम को प्रभावित करती हैं। बॉर्न ने कुछ प्रयोगों का उल्लेख करते हुए यह सिद्ध किया कि संप्रत्यय अधिगम की अनुक्रिया की जटिलता महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करती है। बेकर ने अपने एक प्रयोग में सिद्ध किया की संप्रत्यय समस्याओं और सम्बंधित अनुक्रियाओं की संख्या बढ़ाने

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

से संप्रत्यय अधिगम अधिक कठिन हो जाता है।

(4) बुद्धि:— संप्रत्यय अधिगम पूर्णता बुद्धि पर निर्भर करता है। एक विशेषज्ञ ने अपने एक प्रयोग मे कम तथा अधिक बुद्धि वाले दो प्रकार के लोगों को चुना उसने देखा कि समस्या समाधान मे अधिक बुद्धि वालो मैंने कम बुद्धि वालो कि अपेक्षा अधिक सफलता प्राप्त की। कम बुद्धि वालो के लिए संप्रत्यय अनुक्रिया में चिंता कठिन हो जाती है।

(5) अभिप्रेरणा:— हल ने 1950 में अपने अध्ययनो के आधार पर यह सिद्ध किया की प्रत्येक प्रकार के अधिगम के लिए अभिप्रेरणा आवश्यक होती है क्योंकि अभिप्रेरणा से आदतें परिवर्तित हो सकती है 1953 में वेसली ने अपने प्रयोगो में देखा की उच्च चिंतन वाले व्यक्तियों को संप्रत्यय अधिगम निम्न चिंतन वाले व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक अच्छा है।

(6) अंतराल का प्रभाव:— पूर्व अधिगम का आगामी अधिगम पर प्रभाव अंतरण कहलाता है। संप्रत्यय अधिगम को अंतरण भी प्रभावित करता है। अनेक वैज्ञानिक जैसे हल जैसे मनोवैज्ञानिक ने इस दिशा में प्रयोगात्मक अध्ययन किए है। ब्रेस्ट बोर्न ने भी संप्रत्यय अधिगम मे अंतरण कारक को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

(7) अन्य कारक:— संप्रत्यय अधिगम को उपरोक्त बिंदुओ के अतिरिक्त कारक ही भी प्रभावित करते है उनमें से कुछ महत्वपूर्ण कारक है ज्ञानेन्द्रियों की अवस्था, अधिगम के अवसर, अनुभव के प्रकार, निर्देशन

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

की माता, सूचना माध्यम का प्रकार और व्यक्तित्व आदि।

निष्कर्ष:— उपरोक्त विवरण के आधार पर हम यह कह सकते है कि अधिगम या सीखने के लिए संप्रत्यय भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है। पशु-पक्षी भी संप्रत्यय के आधार पर सीखते है इसमें मुख्यतः 2 प्रक्रियाएं होती है सामान्यीकरण, विभेदीकरण। प्राणी को अपने ज्ञान को व्यवस्थित करने तथा वस्तुओं और घटनाओं को समझने के लिए संप्रत्ययों की आवश्यकता पड़ती है। संप्रत्यय अधिगम में सैद्धांतिक व्याख्या के लिए कई सिद्धांत प्रचलित है जिनमें मुख्यतः साहचर्य सिद्धांत, उपकल्पना सिद्धांत, मध्यवर्तीय क्रम सिद्धांत, सूचना प्रोसेसिंग सिद्धांत शामिल है। व्यक्ति की आयु बढ़ने के साथ-2 संप्रत्ययों में जटिलता और विशिष्टता आती-जाती है। नए अनुभवों और नई दृष्टी से संप्रत्ययों में भी परिवर्तन होता रहता है। मनुष्य को समुचित रूप से व्यवहार करने के लिए आवश्यक है कि वह कुछ विशिष्ट क्रम या व्यवस्था बनाना सीखे तथा अपने ज्ञान को क्रमबद्ध तथा संगठित बनाए।

⇒ UNIT-2 CHAPTER-5

Q. विद्यालय को परिभाषित करते हुए इसका महत्व स्पष्ट कीजिए।

भूमिका:— जॉन डीवी के अनुसार, "विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट वातावरण है जहाँ जीवन के गुणों और विशिष्ट क्रियाओं एवं व्यवसायों की शिक्षा बालक के अंतर्निहित विकास के लिए

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

दी जाती है।"

लीच के अनुसार, "वाद-विवाद या वार्ता के स्थान पर जहाँ एथेन्स के युवक अपने अवकाश के समय को खेलकूद व्यायाम और युद्ध के तरीकों में व्यतीत करते थे। धीरे-धीरे वे दर्शन और उच्च कलाओं के स्कूल में बदल गए। स्कूल शब्द लैटिन भाषा का है इसका अर्थ है विश्राम स्थल। तब का यह विश्राम स्थल आज समाज की प्रगति का केंद्र है। विद्यालय सामाजिकरण का सक्रिय साधन है और नियमित शिक्षा विद्यालय के अभाव में नहीं दी जा सकती।"

विद्यालय का महत्व :-

विद्यालय बालक के सामाजीकरण के विकास का प्रमुख स्थल है उसे समाज का ही लघु रूप कहा गया है, इसके महत्व के बारे में कहा गया है कि राष्ट्र के निर्माता स्कूल के बेंचो पर बैठते है और विद्यालय राष्ट्र निर्माता है। विद्यालय का महत्व हम इस प्रकार से व्यक्त कर सकते है :-

① समाज की जटिलता को हल करने का साधन :-
तथा औद्योगिक प्रभाव के कारण समाज के वैज्ञानिक में समय का अभाव हो गया है माता-पिता अपने बच्चो के विकास में सहायता नहीं कर सकते विद्यालय उनकी सहायता करता है।

② सांस्कृतिक विरासत का विकास :- हर समाज में

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

अपनी संस्कृति होती है यह संस्कृति विद्यालय के माध्यम से विकसित होती है एवं आगे बढ़ती है परिवार अपनी सांस्कृतिक विरासत स्वयं बालक को देने में कठिनाई महसूस कर रहा है यह कार्य अब विद्यालय करने लगा है।

③ विकास से संबंधित वातावरण :— विद्यालय का उद्देश्य रहता है बालक का सर्वांगीण विकास करना विद्यालय स्वयं में एक वातावरण है बालक की रुचि को ध्यान रखते हुए विद्यालय ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है। जिसमें वातावरण विकासशील हो जाए।

④ समाज का लघु रूप :— विद्यालय समाज का लघु रूप है माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी विद्यालय को छोटा समुदाय स्वीकार किया है समाज की मांगे सदैव बदलती रहती है और उनमें सुधार होते हैं इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यालय का बाहरी जीवन के साथ संपर्क रहे।

⑤ उत्तम नागरिकता का निर्माण :— आज के प्रजातांत्रिक समाज का आधार अच्छे नागरिक है विद्यालय बालकों को अच्छे नागरिक बनाने का कार्य करता है। आज के बालकों में विद्यालय अधिकार तथा कर्त्तव्यों का ज्ञान भरता है और अच्छे नागरिक बनाने का प्रयत्न करता है।

⑥ सक्रिय वातावरण का निर्माण :— विद्यालय एक सक्रिय साधन है इसलिए वह

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

बच्चों के लिए जो वातावरण तैयार करता है वह सक्रिय होता है कार्य तथा अनुभवों के द्वारा बालक विद्यालय में सक्रिय बना रहता है। इसमें समाज का विश्वास, माता-पिता का सहयोग, बालक का भाग्य सभी कुछ रहता है। और इसी कारण विद्यालय स्वयं में एक ऐसा विशिष्ट तत्व है जो स्वयं तो सक्रिय रहता ही है और साथ ही जो भी उसके सम्पर्क में रहता है वह भी सक्रिय हो जाता है।

② सर्वांगीण विकास का दायित्व :— विद्यालय का लक्ष्य साफ होता है एक ही उद्देश्य बालक के सभी शक्तियों का समान व संतुलित रूप से विकास करना। घर, समाज और समुदाय भले ही परोक्ष रूप से बालक के सर्वांगीण विकास में योग देते हो परंतु विद्यालय तो केवल इसी कार्य के लिए बनाया गया है। वह व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से गुणों के विकास की ओर ध्यान देता है।

③ उदार दृष्टिकोण का जनक :— विद्यालय कभी भी संकीर्णता उत्पन्न नहीं करता यह जन्मजात शक्तियों का विकास करता है के. जी. सैयदेन के अनुसार "नवीन विद्यालय अपनी पाठ्यपुस्तक, शिक्षण विधियों और कार्यों को सामाजिक दृष्टिकोण से ध्यान में रखकर नियोजित करता है विद्यालय की छोटी दुनिया और बाहर की बड़ी दुनिया में चेतन और सतत सम्बंध होता है। बालक समाजसेवा, नागरिक कार्य, स्वास्थ्य सम्बंधी आंदोलनों आदि सामाजिक कार्यों में भाग लेकर वास्तविक जीवन सम्पर्क में आता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

विद्यालय के कार्य :—

विद्यालय का महत्व अपने आप में अधिक है विद्यालय के दो प्रकार के कार्य विभिन्न विद्वानों ने बताए हैं। पहला है औपचारिक कार्य और दूसरा अनौपचारिक कार्य।

• औपचारिक कार्य :—

① साध्य को प्राप्त करने के लिए समुचित साधनों का ज्ञान देना।
② छात्रों में निर्णय, तर्क, चिंतन, मनन तथा क्रियाशीलता उत्पन्न करना।
③ ज्ञान के विकास में योगदान देना।
④ विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण करना।
⑤ सांस्कृतिक विरासत को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाना।
⑥ बच्चों में नागरिक गुणों का विकास करना और सफल प्रजातंत्र के लिए प्रयास करना।

• अनौपचारिक कार्य :—

① शारीरिक रूप से विभिन्न क्रियाओं के द्वारा छात्रों को स्वस्थ बनाना।
② समाज सेवा, सामाजिक कार्य के आयोजनों से छात्रों में समाज के प्रति कर्तव्यों को उत्पन्न करना एवं उन्हें समाजसेवी बनाना।
③ भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों द्वारा बालकों में भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न करना।
④ सक्रीय वातावरण का निर्माण करने के लिए अनेक रचनात्मक परिवर्तियों को जन्म देना।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

विद्यालय की प्रभावशालिता :—

आज के युग में हम देख चुके हैं कि विद्यालय समाज का अभिन्न अंग है उसे सामाजिक जीवन से अलग नहीं किया जा सकता विद्यालय को निम्न प्रकार से सहयोग देकर प्रभावशाली बनाया जा सकता है :—

① परिवार :— परिवार वह संस्थान है जहाँ बालक का पालन - पोषण होता है पालन - पोषण के कुछ वर्षों के बाद विद्यालय पर बालक का दायित्व आ जाता है। बालक के विद्यालय विकास में परिवार तथा विद्यालय दोनों ही मिलकर कार्य करें तो विद्यालय अधिक प्रभावशाली ढंग से कार्य कर सके। इसके लिए विद्यालय अभिभावक संघ का निर्माण करें और अभिभावक दिवस मनाने की प्रथा को जन्म दें।

② सामाजिक जीवन :— विद्यालय उस समय तक भी अधिक प्रगति नहीं कर सकता जब तक वह अपना संपर्क समाज में नहीं रखता। विद्यालय इस संपर्क को बनाने के लिए समाजसेवाओं में भाग लेना, समाज के सदस्यों को अपने कार्यक्रम में आमंत्रित करना, सामाजिक विषयों की शिक्षा देना। प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम बनाना आदि। विद्यालय जितना समाज के सम्पर्क में रहेगा उतना ही प्रभावपूर्ण ढंग से कार्य करेगा।

③ राज्य :— नेपोलियन के अनुसार, "सरकार का प्रथम कर्तव्य जन शिक्षा है।" अतः राज्य को चाहिए कि वह अच्छे एवं प्रगतिशील विद्यालयों की स्थापना करे। योग्य शिक्षकों का निर्माण करे। विद्यालय उसी

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:

समय प्रभावशाली ढंग से कार्य कर सकते हैं जब उसे आर्थिक सहायता अधिक मिलेगी और उस पर नियंत्रण भी उचित होगा।

निष्कर्ष:—
उपरोक्त बातों पर विचार करके हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे की विद्यालय राष्ट्र की प्रगति में बहुत योगदान देते है राष्ट्र की नींव को मह मजबूत करते है उसके आदर्शों को अधिक प्रभावशाली बनाते है। ब्रूबेकर मे ने विद्यालय के संरक्षणात्मक, प्रगतिशील एवं निष्पक्ष कार्य बताए है और विद्यालय को बिना किसी पक्षपात के सभी कार्य करने चाहिए जिससे भावी पीढ़ी प्रशिक्षित हो और विद्यालय के पावन कर्तव्यों की पूर्ती हो।

Q.3. विद्यालय का क्षेत्र ~~एवं~~ विद्यालय में भाषा कौशल का विकास ?

Ans. भूमिका :—
व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का बड़ा महत्व हैं। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपना विकास करने में सक्षम होता हैं। मनुष्य का व्यवहार मुख्य रूप से दो प्रकार की प्रवृतियों पर आधारित होता हैं :-

(1) जन्मजात मूल प्रवृतियाँ
(2) अर्जित प्रवृतियाँ

दूसरे प्रकार की प्रवृतियाँ जन्म लेने के

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

बाद सीखता है जिससे कुछ उसकी आदत बन जाती है। मनुष्य का अधिकांश व्यवहार इन आदतों द्वारा ही नियमित होता है। इन आदतों के निर्माण में शिक्षा का बड़ा योगदान है। शिक्षा के अनुरूप ही मनुष्य में आदतों के संस्कार पड़ जाते हैं। शिक्षा के द्वारा सविधिक और अविधिक संस्थाओं तथा स्कूल कॉलेजों से प्राप्त होता है। शिक्षा के क्षेत्र में स्कूल का क्या महत्व है हम इसकी यहाँ पर विस्तार से वर्णन करेंगे।

① विद्यालय में विविध सामाजिक समर्थताओं का विकास :-

मानव शिशु परिवार में जन्म लेता है जन्म के समय वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए परिवार अथवा इसरों पर आश्रित रहता है। इसी कारण बालक परिवार के वातावरण में समायोजन स्थापित करने का प्रयत्न करता है। इसरों की बातों, विश्वासों और परम्पराओं को बिना सोचे-समझे अनुकरण करता है इस प्रकार बालक की आदतें, रुचियाँ और मनोवृति का निर्माण सम्पर्कित वातावरण के आधार पर होता है। बालक में सहयोग की मनोवृति का विकास समाज के संपर्क में आने से ही होता है। किन्तु यदि इसरों का संपर्क बालक को असंगठित रूप से प्राप्त होता है, तो उसके व्यक्तित्व का विकास वांछनीय रूप से नहीं हो सकता। इस असंगठित संपर्क की सरलता से प्राप्ती बालक को स्कूल में होती है। अतः शिक्षा का उद्देश्य

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

केवल व्यक्ति के हित में न होकर संपूर्ण समाज के हित को ध्यान में रखकर होना चाहिए क्योंकि व्यक्ति एवं समाज के हितों में परस्पर संबंध होता है।

② स्कूल समाज का प्रतिनिधि :- स्कूल समाज का प्रतिनिधि होता है जिसके सहयोग से व्यक्ति सामाजिक जीवन की उपयोगिता जान लेता है। स्कूल ही सांस्कृतिक मान्यताओं की रक्षा करता है और उन्हें दूसरे लोगों की भलाई के लिए प्रदान करता है यद्यपि व्यक्ति समाज की बहुत सी मान्यताओं की जानकारी स्कूलों के अलावा परिवार, पुस्तकालय, रेडियो, भाषण तथा अन्य स्रोतों से सीख लेता है। फिर भी स्कूल में बालक उन विविध कलाओं से युक्त होता है जो उसे भिन्न-२ साधनों से अधिक-से-अधिक लाभ प्राप्त करने की ओर प्रेरित करते हैं।

③ माता-पिता और शिक्षक :- साधारणतः परिवार में माता-पिता के व्यस्त होने के कारण बालक की शिक्षा व सर्वांगीण विकास की ओर ध्यान नहीं दे पाते। ऐसी स्थिति में माता-पिता बालक को स्कूल भेज देते हैं सभ्यता के प्रारंभिक काल में सामाजिक आवश्यकताओं का चेतन क्षेत्र अत्यंत सीमित था और मनुष्य को थोड़ा मिल जाने पर बड़ी संतुष्टी होती थी। अधिकांश बच्चों की शिक्षा-दिक्षा परिवार के अंतर्गत ही होती थी। किंतु वर्तमान समय में मानव-जीवन की समस्याएँ दिन-प्रतिदिन विषम होती जा रही हैं। समस्याओं के सफल समाधान के लिए प्रत्येक को एक विशेष ढंग की कुशलता का ज्ञान होना आवश्यक है यह कुशलता बालक स्कूल

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

के सहयोग से आसानी से सीख लेता है इसी कारण बालकों को स्कूल में शिक्षा देना एक परंपरा बन गई। वैज्ञानिक विधियों के आविष्कार से लोग शिक्षा दर्शन तथा शिक्षा शास्त्र के महत्व को समझ रहे है. स्कूल एक ऐसा स्थान है जो बालक को आस-पड़ोस तथा परिवार के खराब वातावरण से दूर रखता है। इसलिए स्कूल में जाने से बालक को तरह के अनुभव प्राप्त होते है जो उसके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते है।

Ⓠ <u>विद्यालय मे भिन्न -२ कर्तव्य</u> :— समाज की आवश्यकताओ की पूर्ति में सहायता करना स्कूल का कर्तव्य होना चाहिए । दूसरे शब्दों में स्कूल का स्वरूप एक सामाजिक ~~संस्था~~ संस्था जैसा है जो लोगों को कुशल अनुशासित और व्यवस्थित समाज का सदस्य बनने की ओर उन्मुख करता है इसलिए जहाँ पर स्कूल स्थित हो उसे आस-पास के पर्यावरण की आवश्यकताओ के सम्बंध में निश्चित रूप से चिंता करनी चाहिए । गाँव में रहने वाले बालको की आवश्यकताएँ नगर के बालको की अपेक्षा भिन्न होती है । अतः गाँव अथवा नगर में स्कूल के कार्यक्रम का निर्धारण करने से पहले वहाँ के सामाजिक वातावरण का अध्ययन करना जरूरी है।

Q- पठन कौशल का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसकी विशेषताओं का वर्णन करो।

Ans. <u>पठन कौशल की भूमिका</u> :— भाषा शब्द से ही ज्ञात होता है भाषा का मूल रूप उच्चरित रूप है इसका दृष्टिकोण प्रतीक लिपिबद्ध होता है। जब

प्रश्न – पठन कौशल का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसकी विशेषताओं का वर्णन करो।

उत्तर – पठन कौशल की भूमिका :–

भाषा शब्द से ही ज्ञात होता है कि भाषा का मूल रूप उच्चरित रूप है, इसका दृष्टिकोण प्रतीक लिपिबद्ध होता है। जब हम बच्चे को पढ़ाना आरम्भ करते है तो अक्षरों के प्रत्यय हमारे मस्तिष्क के कक्षा भाग में क्रमबद्ध होकर एक तस्वीर बनाते हैं। यह क्रिया जिसमें शब्दों के साथ अर्थ ध्वनि भी निहित है पठन कहलाती है।

पठन कौशल का अर्थ :–

कैथरीन ओकानर के अनुसार, "पठन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है जिसमे दृश्य, श्रव्यों सर्किटों का मस्तिष्क के अधिगम केन्द्र से सम्बन्ध निहित है।"

साधारण शब्दों में हम कह सकते हैं कि लिखित भाषा के ध्वन्यात्मक पाठ को मौखिक पठन कहते हैं पर बिना अर्थ ग्रहण किए गए पढ़ने को पठन नहीं कहा जा सकता। अर्थ ग्रहण किस सीमा तक होता है, यह तो पठनकर्ता के ज्ञान एवं कौशल पर निर्भर है।

पठन कौशल के आधार :– पठन कौशल के दो प्रमुख आधार हैं – 1. वाचन मुद्रा 2. वाचन शैली

1. वाचन मुद्रा :– वाचन मुद्रा का अर्थ है बैठने, खड़े होने का ढंग, वाचन सामग्री हाथ में ग्रहण करने की रीति तथा भावानुसार हाथ, पैर, नेत्र आदि अन्य अंगों का संचालन।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

RAJDHANI PAGE: DATE: / /

2. वाचन शैली :— अवरोह के साथ पढ़ना वाचन शैली है। प्रत्येक वाचक को वाचन करते समय बाएं हाथ में पुस्तक को इस प्रकार बीच में पकड़ना चाहिए कि ऊपर उसके बीच में मोड़ पर बाएँ हाथ का अंगुठा आ जाए और दूसरा हाथ आवश्यकतानुसार के लिए खुला छुटा रहे। बड़ी पुस्तक को दोनों हाथों से पकड़ा जा सकता है। पढ़ते समय दृष्टि पुस्तक पर ही ना रहे, वरन श्रोताओं की ओर देख लेना चाहिए।

विशेषताएँ :—
सुन्दर पठन कौशल में निम्न गुणों का होना जरूरी है—

1. प्रत्येक अक्षर को शुद्ध तथा स्पष्ट उच्चरित करना।
2. वाचन में सुन्दरता के साथ प्रवाह बनाये रखना।
3. मधुरता, प्रभावोत्पादकता तथा चमत्कारपूर्ण ढंग से आरोह – अवरोह के साथ वाचन होना चाहिए।
4. प्रत्येक शब्द को अन्य शब्दों से अलग करके उचित बल तथा विराम के साथ पढ़ना।

उद्देश्य :—

1. बालकों के स्वर में आरोह – अवरोह का ऐसा अभ्यास करा दिया जाए कि वे यथावसर भावों के अनुकूल स्वर में लोच देकर पढ़ें।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

2. वाचन के माध्यम से शब्दों पर उचित बल दिया जाता है।
3. छात्र पढ़कर उसका भाव समझे तथा दूसरों को भी समझाए वाचन का एक उद्देश्य है।
4. वाचन से अक्षर उच्चारण, द्रुति, बल, निर्गम आदि को सम्यक संस्कार प्राप्त होता है।
5. वाचन के द्वारा छात्र विराम, अर्धविराम, आदि चिन्हों का प्रयोग समझ जाता है।
6. पठन का उद्देश्य पठित अंश का भाव ग्रहण करना है।
7. वाचन का उद्देश्य त्रुटियों का निवारण भी है।
8. पठन शब्द भण्डार में बढ़ोतरी करता है।
9. वाचन से स्वाध्याय की प्रवृत्ति जागृत होती है।

अर्थ ग्रहण पर आधारित विधियाँ –

1. देखो और कहो विधि – इस विधि में शब्द से सम्बन्धित वस्तु या चित्र देखकर पहले शब्द का ज्ञान कराया जाता है। चित्र के नीचे वस्तु का नाम लिखा होता है। चित्र परिचित होने के कारण बच्चे आसानी से शब्द से साहचर्य स्थापित कर लेते हैं अध्यापक की नकल करते हुए बच्चे शब्द का उच्चारण करते हैं। कई बार देखने-सुनने और बोलने से वर्णों के चित्र मस्तिष्क पर अंकित हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

1. गुण – यह विधि मनोवैज्ञानिक है। इसमें पूर्ण से अंश की ओर ज्ञात से अज्ञात की ओर सरल से जटिल की ओर आदि शिक्षण सूत्रों का पालन होता है।

2. दोष :— इस विधि में ~~चित्र~~ सारी शब्दों के चित्र उपस्थित करना असम्भव है। बच्चे चित्र से साहचर्य स्थापित कर लेते हैं। चित्र के अभाव में शब्द पढ़ना कठिन हो जाता है।

2. वाक्य विधि – इस मत के प्रतिपादकों का मत है कि बालक वाक्य या वाक्यांशों में बोलता है। इसकी इकाई वाक्य है शब्द नहीं। इसलिए आरम्भ से बालकों को वाक्यों से ही वाचन शुरू कराना चाहिए। पहले वाक्य फिर शब्द, फिर वर्ण – इस क्रम में बच्चों का वाचन का अभ्यास कराया जाता है।

3. कहानी विधि – इस विधि में छोटे-छोटे वाक्यों से निर्मित कहानी चार्ट व चित्रों के माध्यम से बच्चों के समक्ष प्रस्तुत की जाती है। छात्र अध्यापक का ~~ति~~ अनुसरण करते हैं। यह विधि वाक्य विधि का परिष्कृत रूप है।

4. अनुकरण विधि – यह विधि 'देखो और कहो' विधि का दूसरा स्वरूप है। इसमें शिक्षक एक-एक शब्द बालकों के समक्ष कहता है और छात्र उसे दोहराते हैं व अनुकरण करते हैं। इस प्रकार छात्र शब्द-ध्वनि का उच्चारण एवं पठन सीखते हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

5. सम्पर्क विधि – इस विधि का प्रचार माण्टेसरी ने किया था। इसमें पहले बालकों को चित्र, खिलौने, वस्तुएँ आदि से परिचित कराते हैं उनके आगे वस्तुओं के कार्ड रखते हैं। फिर कार्डों को मिला देते हैं और बच्चों को कहा जाता है, जो कार्ड जिस वस्तु से सम्पर्क रखते हैं उसके आगे पुनः रख दें। इस सम्पर्क प्रणाली के अभ्यास से धीरे-धीरे छात्र शब्द व वर्ण से परिचित हो जाते हैं।

निष्कर्ष :– उपरोक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि पठन कौशल की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकता होती है। पठन की योग्यता न रखने से व्यक्ति संसार की सांस्कृतिक महानता में अपने अस्तित्व का आनन्द नहीं ले पाता। इस योग्यता के अभाव में मनुष्य के जीवन में कई प्रकार की बाधाएं खड़ी हो जाती हैं। सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक विकास के लिए आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकसित होना आवश्यक है। इस दृष्टिकोण के विकास के लिए अध्ययन अति आवश्यक है और 'अध्ययन' पठन का एक रूप है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner